हरिभूमि
समाचार ही नहीं, विचार भी

Date: 21-02-2024

जींद। कार्यक्रम में भाग लेते विश्वविद्यालय स्टाफ व गणमान्य लोग।

डॉ. नामवर सिंह का नाम हिंदी जगत में शिखर पर

- विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में मनाई नामवर की पुण्यतिथि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में नामवर की पुण्यतिथि पर नामवर की नामवरी साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। मुख्यअतिथि के रूप में प्रो. सत्यपाल सहगल पूर्व विभागाध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ और मुख्य वक्ता के रूप में युवा लेखक एवं आचोलक डा. अंकित नरवाल युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित ने आयोजन को शोभायमान किया।

मुख्य वक्ता के रूप में नामवर की जीवनी लेखाकार डा. अंकित नरवाल ने आयोजन को सार्थकता प्रदान करते कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है। पहला 1941 से 1959 तक, जब वे पहली बार बनारस पढ़ने के लिए आए और फिर वहीं अध्यापक बने और फिर वहां से एक विशेष पार्टी से चुनाव लड़ने के कारण निष्कासित किए गए। दूसरा 1960-1974 तक। यह वह समय है जब वे बनारस में ही अपने घर में धूणी रमा कर साहित्यिक अध्ययन में रम गए और फिर 1974 में जेएनयू में अध्यक्ष बने। उनके जीवन के ये लगभग 15 वर्ष जहां आर्थिक स्तर पर बेहद तकलीफ के वर्ष थे, वहीं रचनात्मक तौर पर निसंदेह अनुपम। उनका जेएनयू में अध्यक्ष बनकर आना और वहां एक नए ढंग का सेंटर बनाना हिन्दी के लिए एक अनुकरणीय बन गया। वहीं वे मैनेजर पांडेय, केदारनाथ सिंह, वीरभारत तलवार और पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे अध्यापकों को लेकर आए और हिंदी का अपने ढंग का सबसे अद्भुत विभाग स्थापित किया। उन्होंने वहां के विद्यार्थियों में यह हौसला भरा कि हिंदी वाला भी सभी बहसों में भाग ले सकता है। वे केवल बहसों के मूक श्रोता भर नहीं थे, बल्कि उनकी मेधा इन बहसों को एक नई दिशा देती थी। उनके जीवन का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कालखंड 1974 से 2019 तक है। यह वही दौर है जिसमें वे आलोचना के युग व्यक्तित्व बने। उन्होंने आलोचना को सहयोगी प्रयास की तरह स्थापित किया।

अमर उजाला

Date: 21-02-2024

डॉ. नामवर का नाम हिंदी जगत में शिखर पर : डॉ. रणपाल

कार्यक्रम में भाग लेते विश्वविद्यालय स्टाफ व अन्य। स्रोत : विवि

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में मंगलवार को नामवर की पुण्यतिथि पर 'नामवर की नामवरी साहित्य' समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्यातिथि प्रो. सत्यपाल सहगल पूर्व विभागाध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ और मुख्य वक्ता युवा लेखक एवं आलोचक डॉ. अंकित नरवाल रहे।

नरवाल ने कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है। पहला 1941 से 1959 तक, जब वे पहली बार बनारस पढ़ने के लिए गए और फिर वहीं अध्यापक बने और फिर वहां से एक विशेष पार्टी से चुनाव लड़ने के कारण निष्कासित किए गए। दूसरा 1960-1974 तक। यह वह समय है जब वे बनारस में ही अपने घर में धूणी रमा कर साहित्यिक अध्ययन में रम गए और फिर 1974 में जेएनयू में अध्यक्ष बने। उनके जीवन के ये लगभग 15 वर्ष जहां आर्थिक स्तर पर बेहद तकलीफ के वर्ष थे, वहीं रचनात्मक तौर पर निःसंदेह अनुपम। उनका जेएनयू में अध्यक्ष बनकर आना और वहां एक नए ढंग का सेंटर बनाना हिंदू के लिए एक अनुकरणीय बन गया। वहीं वे मैनेजर पांडेय, केदारनाथ सिंह, वीरभारत तलवार और पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे अध्यापकों को लेकर आए और हिंदी का अपने ढंग का सबसे अद्भुत विभाग स्थापित किया। उन्होंने वहां के छात्रों में यह हौसला भरा कि हिंदी वाला भी सभी बहसों में भाग ले सकता है। वे केवल बहसों के मूक श्रोता भर नहीं थे, बल्कि उनकी मेधा इन बहसों को एक नई दिशा देती थी। उनके जीवन का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कालखंड 1974 से 2019 तक है। यह वही दौर है जिसमें वे आलोचना के युग व्यक्तित्व बने।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने कहा कि इस प्रकार के जयंती एवं पुण्य स्मरण समारोह आयोजित होते रहने चाहिए। इससे छात्र साहित्यकारों से अवगत रहते हुए अनुप्रेरित होते हैं। डॉ. नामवर सिंह का नाम हिंदी जगत में शिखर स्थान का अधिकारी है। इस अवसर पर डॉ. सुमन पूनिया, डॉ. जोगी सिंह, डॉ. जयपाल सिंह, डॉ. ब्रजपाल, डॉ. सुनील, डॉ. सुमन, शैलेंद्र भोला, दीपक, रिंकू और सुमित मौजूद थे।

पंजाब केसरी

Date: 21-02-2024

डा. नामवर सिंह का नाम हिंदी जगत में शिखर स्थान का अधिकारी : वी.सी.

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में मनाई नामवर की पुण्यतिथि

जींद, 20 फरवरी (स.ह.) : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में नामवर की पुण्यतिथि पर नामवर की नामवरी साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में प्रो. सत्यपाल सहगल पूर्व विभागाध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ और मुख्य वक्ता के रूप में युवा लेखक डा. अंकित नरवाल युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित ने आयोजन को शोभायमान किया।

मुख्य वक्ता के रूप में नामवर की जीवनी लेखाकार डा. अंकित नरवाल ने आयोजन को सार्थकता प्रदान करते हुए कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है। पहला 1941 से 1959 तक, जब वे पहली बार बनारस पढ़ने के लिए आए और फिर वहीं अध्यापक बने और फिर वहां से एक विशेष पार्टी से चुनाव लड़ने के कारण निष्कासित किए गए। दूसरा 1960-1974 तक। यह वह समय है जब वे बनारस में ही अपने घर में धूणी रमा कर साहित्यिक अध्ययन में रम गए और फिर 1974 में जे.एन.यू. में अध्यक्ष बने। उनके जीवन के ये लगभग 15 वर्ष जहां आर्थिक स्तर पर बेहद तकलीफ के वर्ष थे, वहीं रचनात्मक तौर पर निःसंदेह अनुपम। उनका जे.एन.यू. में अध्यक्ष बनकर आना और वहां एक नए ढंग का सैंटर बनाना हिन्दी के लिए एक अनुकरणीय बन गया। वहीं वे मैनेजर पांडेय, केदारनाथ सिंह, वीरभारत तलवार और पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे अध्यापकों को लेकर आए और हिंदी का अपने ढंग का सबसे अद्भुत विभाग स्थापित किया।

उन्होंने वहां के विद्यार्थियों में यह हौसला भरा कि हिंदी वाला भी सभी बहसों में भाग ले सकता है। वे केवल बहसों के मूक श्रोता भर नहीं थे, बल्कि उनकी मेधा इन बहसों को एक नई दिशा देती थी। उनके जीवन का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कालखंड 1974 से 2019 तक है। यह वही दौर है जिसमें वे आलोचना के युग व्यक्तित्व बने। उन्होंने आलोचना को सहयोगी प्रयास की तरह स्थापित किया। उन्होंने अपने भाषणों से साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीति, दर्शन और समाजशास्त्र जैसे विषयों की उपयोगिता को विवेचित किया।

उन्होंने बताया कि नामवर सिंह निम्न मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए। उनके साहित्यिक संस्कार कामता प्रसाद विद्यार्थी ने पोषित किए। चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय कुलपति डा. रणपाल सिंह ने कहा कि इस प्रकार के जयंती एवं पुण्य स्मरण समारोह आयोजित होते रहने चाहिएं। इसने विद्यार्थी साहित्यकारों से अवगत रहते हुए अनुप्रेरित होते हैं। डा. नामवर सिंह का नाम हिंदी जगत में शिखर स्थान का अधिकारी है।

कार्यक्रम में भाग लेते हुए विश्वविद्यालय स्टाफ व गण्यमान्य लोग।

दैनिक जागरण

Date: 21-02-2024

कवि नामवर की पुण्यतिथि पर हुआ साहित्य समारोह

जागरण संवाददाता, जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कवि नामवर सिंह की पुण्यतिथि पर नामवर की नामवरी साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. सत्यपाल सहगल मुख्यातिथि और युवा लेखक एवं आलोचक डा. अंकित नरवाल (युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित) मुख्य वक्ता रहे।

सीआरएसयू में साहित्य समारोह के दौरान स्टाफ और मुख्य वक्ता। ● सौ. विवि

अंकित नरवाल ने कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है। पहला 1941 से 1959 तक, जब वे पहली बार बनारस पढ़ने के लिए आए और फिर वहीं अध्यापक बने। फिर वहां से एक विशेष पार्टी से चुनाव लड़ने के कारण निष्कासित किए गए। दूसरा 1960-1974 तक। यह वह समय है, जब वे बनारस में ही अपने घर में धूणी रमाकर साहित्यिक अध्ययन में रम गए और फिर 1974 में जेएनयू में अध्यक्ष बने। उनका जेएनयू में अध्यक्ष बनकर आना और वहां एक नए ढंग का सेंटर बनाना हिंदी के लिए एक अनुकरणीय बन गया। उनके जीवन का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कालखंड 1974 से 2019 तक है। यह वही दौर है, जिसमें वे आलोचना के युग व्यक्तित्व बने। वीसी डा. रणपाल सिंह ने कहा कि इस प्रकार के जयंती एवं पुण्य स्मरण समारोह आयोजित होते रहने चाहिए। इसने विद्यार्थी साहित्यकारों से अवगत रहते हुए अनुप्रेरित होते हैं।

डा. नामवर सिंह का नाम हिंदी जगत में शिखर स्थान का अधिकारी है। रजिस्ट्रार प्रो. लवलीन मोहन ने कहा है कि नामवर सिंह का नाम अंग्रेजी विभागों में भी बड़े आदर के साथ याद किया जाता है। उनकी आलोचना बेहद नवीन विषयों को केंद्र में लाती रही है। अधिष्ठाता मानविकी संकाय प्रो. संजय कुमार सिन्हा ने बताया कि देश में जहां कहीं भी साहित्य की बात आती है, नजरें बरबस ही काशी की ओर मुड़ जाती हैं। डा. मंजू रेढू ने बताया कि नामवर सिंह के प्रशंसक कहते हैं, उनकी जैसी शख्सियतें, जिनसे सहमत होना भी असहमत होने जितना ही कठिन हो। इस अवसर पर प्रो. सत्यपाल सहगल ने कहा कि डा. नामवर सिंह ने हिंदी और आलोचना दोनों के लिए विशेष काम किया है। इस अवसर डा. सुमन पूनिया, डा. जोगी सिंह, जन संपर्क एवं सूचना अधिकारी डा. जयपाल सिंह राजपूत, सुधीर, हिंदी विभाग से डा. ब्रजपाल, डा. सुनील, डा. सुमन, शैलेंद्र भोला उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर
ई-पेपर

Date: 21-02-2024

सीआरएसयू के हिंदी विभाग में 'नामवर की नामवरी' साहित्य समारोह

नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है : डॉ. अंकित नरवाल

भास्कर न्यूज़ | जींद

सीआरएसयू के हिंदी विभाग में नामवर की पुण्यतिथि पर 'नामवर की नामवरी' साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पंजाब विश्वविद्यालय से पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. सत्यपाल सहगल और मुख्य वक्ता के रूप में युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित लेखक डॉ. अंकित नरवाल ने शिरकत की।

डॉ. अंकित नरवाल व डॉ. मंजू रेढ़ू ने कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बांटकर देखा जाता है। पहला 1941 से 1959 तक, जब वे पहली बार बनारस पढ़ने के लिए आए और फिर वहीं अध्यापक बने। वहां से एक विशेष पार्टी से चुनाव लड़ने के कारण निष्कासित किए गए। दूसरा 1960-1974 तक। यह वह समय है जब वे बनारस में ही अपने घर में धूनी रमाकर साहित्यिक अध्ययन में रम गए और फिर 1974 में जेएनयू में अध्यक्ष बने। उनके जीवन के ये लगभग 15 वर्ष जहां आर्थिक स्तर पर बेहद तकलीफ के वर्ष थे। वहीं रचनात्मक तौर पर निःसंदेह अनुपम। उनका जेएनयू में अध्यक्ष बनकर आना और वहां एक नए ढंग का सेंटर बनाना हिंदी के लिए एक अनुकरणीय बन गया। वहीं वह मैनेजर पांडेय, केदारनाथ सिंह, वीर भारत तलवार और पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे अध्यापकों को लेकर आए और हिंदी का अपने ढंग का सबसे अद्भुत विभाग स्थापित किया। इस अवसर पर डॉ. जोगी सिंह, डॉ. जयपाल सिंह राजपूत, सुधीर, डॉ. ब्रजपाल, डॉ. सुनील, डॉ. सुमन, शैलेंद्र भोला, दीपक, रिंकू और सुमित भी मौजूद रहे।

जींद. सीआरएसयू में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते सदस्य।

इंडिया टाइमर

Date: 21-02-2024

साहित्यकारों ने सीआरएसयू में नामवर किया याद

सदियों में एक-दो ही पैदा होती है शख्सियतें : मंजू रेढू

जींद,ब्यूरो(इंडिया टाइमर): चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद के हिन्दी विभाग में नामवर की पुण्यतिथि पर 'नामवर की नामवरी' साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सत्यपाल सहगल (पूर्व विभागाध्यक्ष, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़) और मुख्य वक्ता के रूप में युवा लेखक एवं आचोलक डॉ. अंकित नरवाल (युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित) ने आयोजन को शोभायमान किया। मुख्य वक्ता के रूप में नामवर की जीवनी लेखाकार डॉ. अंकित नरवाल ने आयोजन को सार्थकता प्रदान करते हुए कहा कि नामवर सिंह के जीवन को तीन काल खंडों में बाँटकर देखा जाता है। चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने कहा कि इस प्रकार के जयंती एवं पुण्यस्मरण समारोहों आयोजित होते रहने चाहिए। इसने विद्यार्थी साहित्यकारों से अवगत रहते हुए अनुप्रेरित होते हैं। कुलसचिव प्रो0 लवलीन मोहन ने कहा है कि नामवर सिंह का नाम अंग्रेजी विभागों में भी बड़े आदर के साथ याद किया जाता है। उनकी आलोचना बेहद नवीन विषयों को केन्द्र में लाती रही है। अधिष्ठाता, मानविकी संकाय प्रो. संजय कुमार सिन्हा ने बताया कि देश में जहां कहीं भी साहित्य की बात आती है नजरें बरबस ही काशी की ओर मुड़ जाती हैं। अपने बीज वक्तव्य में डॉ. मंजु रेढू ने बताया कि नामवर सिंह के प्रशंसक कहते हैं कि उनकी जैसी शख्सियतें, जिनसे सहमत होना भी असहमत होने जितना ही कठिन हो, सदियों में एक-दो ही पैदा हुआ करती हैं, जबकि उनकी बाबत इस तथ्य को लेकर किसी भी स्तर पर कोई असहमति नहीं है कि वाद-विवाद संवाद के रस में पगते, बेचैनी व तड़प से भरते, कभी द्वंद्व के लिए ललकारते, कभी निःशस्त्र करते और कभी वार चूकते हुए उन्होंने अपने लिए जितना अकेलापन, असहमतियां व विवाद लेखन व सृजन से पैदा किए, उनसे ज्यादा व्याख्यानों से पैदा किए। 'नामवर की नामवरी' साहित्य समारोह का कुशल संचालन डॉ. सुमन पूनिया ने अत्यन्त दक्षता से किया और सभी विद्वानों ने उनके संचालन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस समारोह में डॉ. जोगी सिंह, जनसम्पर्क एवं सूचना अधिकारी डॉ. जयपाल सिंह राजपूत एवं सुधीर, हिन्दी विभाग से डॉ. ब्रजपाल, डॉ. सुनील, डॉ. सुमन, शैलेन्द्र भोला तथा विश्वविद्यालय पुस्तकालय में कार्यशील दीपक, रिंकू और सुमित की उपस्थिति जीवंत रही।